IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

कृष्णा सोबती की कहानियों में स्त्री समाज

ममता गुप्ता
शोधार्थी हिन्दी
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

डॉ. उर्मिला वर्मा
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश –

साहित्य समाज का दर्पण है। लोकमंगल की दृष्टि से सृजित साहित्य शब्द अपने व्यापक अर्थो में उन सभी भावों का लेकर चलता है जिसमें शाश्वत मूल्यों का तथा सामयिक मूल्यो का विकास हो यह हमारी संस्कृति पर निर्भर है जिनमें एक बेहतरीन जीवन की कल्पना की गयी है हम सभी मानव परस्पर मिल जुलकर रहे साथ ही साथ एक ऐसे विकास की भूमिका में हो जा मनुष्य के अलावा प्राणियों को भी मंगल भावों से भर दें। साहित्य में विभिन्न सामाजिक समस्याए प्रतिबिंबित होती है साहित्य अपने युग की तथा कल्याण की प्रवृतियों को साहित्य की सीमा से ऊपर उठाकर उसे सार्थकता प्रदान करती है।

मुख्य शब्द – कृष्णा सोबती, कहानियों, स्त्री, समाज, साहित्य, कथा आदि।

प्रस्तावना –

कृष्णा सोबती हिन्दी कथा साहित्य में एक ऐसा ही नाम है जो महिला जगत लेखन में अपना न केवल विशेष उत्थान रखती है बल्कि अपने स्वतंत्र चिंतन के कारण एक स्वतंत्र पहचान भी बनाये हुये है। कृष्णा साबती ने अपने लेखनी को यथार्थ की स्याही में डुबोकर नारी चेतना को सशक्त साहित्यिक पृष्टभूमि प्रदान करने एवं नारी जीवन के बहुआयामी लक्ष्यों को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया है। कृष्णा साबती का लक्ष्य केवल पारिवारिक स्तर पर ही नही, सामाजिक स्तर पर भी नारी की प्रगति रहा है। स्त्री विमर्श के सभी पहलुओं को कृष्णा सोबती की कहानियों तथा उपन्यासों में देखा जा सकता है। स्त्री की पारिवारिक, समाजिक, आर्थिक, समस्याओं को उन्होने अपेन कथा साहित्य में प्रस्तुत किया है। स्त्री अस्मिता, आत्मनिर्भरता, कर्त्तव्यपरायणता, अस्तित्वबोध, विद्रोह, आर्थिक, स्वावलंबन, स्वतंत्रता की चेतना सजनात्मकता, कर्मोमुख्ता, आत्मविश्वास आदि विषयों को कृष्णा सोबती ने कहानी साहित्य में चित्रित किया है नारी लेखन सीमित है बल्कि वह लेखन समाज के सामने बहुविधि रुप में सामने आया है। हिन्दी साहित्य के कतिपय आलोचको ने स्त्री लेखन पर अनेक तरह के आरोप मढें हैं कि स्त्री लेखन सीमित यथार्थ को लेकर चला है लेकिन उनकी यह बात पूरी तरह सच नहीं है क्योंकि जब हम स्त्री लेखन दुनिया को पढते – सुनते हैं तो सच उभरकर सामने यह आता है कि वह लेखन संसार अपने परिवेश और अपनी स्थिति से बाहर निकलकर आ रहा है । यह बात हिन्दी की महिला कहानीकारों की कहानियों के विश्लेषण से पूरी तरह स्पष्ट होती है। हिन्दी महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती का लेखन आज के समय और संत्रासों के बीच विशिष्ट और संघर्ष का लेखन है । वे अपनी कहानियों और उपन्यासों मे नारी जीवन की विसंगतियों के चित्रणों के साथ –साथ नारी की वैयक्ति को स्थापित करने वाली संवेदनशील कथाकार है।

नारी एवं पुरूष गृहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहिए है। इन दोनो के ताल–मेल से ही गृहस्थी का रथ सुचारू से गतिमान रहता है। नारी घ्ज्ञर की शोभा है। वह कोमतलता की प्रतिमूर्ति है। समय आने पर वह दुर्गा बनकर रणक्षेत्र में दुश्मन को चुनौती

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

देने वाली विराट शक्ति है। उसमें अथाह धैर्य है। क्रोध तथा साहस की भावना भी निहित है। उसमें प्रेम तथा त्याग की भावना व्याप्त है।

नारी का जीवन बड़ा ही कठिन एवं संघर्षमय जीवन होता है, क्योकिं उसका जीवन स्वयं के लिये नही बल्कि दूसरो के लिये समर्पित होता है। नारी अपनी इच्छाओ और आकांक्षाओं को इस समाज के दायरे में रहकर दबा देती है। उसका रूप कभी सहचरी का होता है तो कभी प्रेमिका का। वह सहचरी के रूप में अपने साथी को भरपूर सहयोग करती है। कदम–कदम पर उसका साथ निभाती है। प्रेमिका के रूप में अपने प्रेमी के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती है। पत्नी के रूप में अपने पति की आज्ञाओं का पालन जीवन पर्यन्त करती है व अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है। धैर्य, सहनशीलता माता, पत्नी, सहचरी, प्रेमिका आदि रूप्ज्ञ में नारी अपनी स्वयं की इच्छाओं का दमन करती है, किन्तु इन रिश्तों की जंजीर को कभी टूटने नही देती है। वह अपने धैर्य और कर्तव्य पथ से कभी विचलित नही होती है, जबकि पुरूष प्रधान समाज नारी के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरी तरह से निभा नही पाता। नारी कभी भी पुरूष प्रधान समाज नारी के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरी तरह से निभा नही पाता। नारी कभी भी पुरूष की कमी नही खोजती है। बल्कि पग–पग पर वह सहचरी बनकर पुरूष को कठिन पग डण्डियों में भी रास्ते बनाते हुये मार्ग प्रशस्त करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि – ''प्राचीन काल से आज तक स्त्रियाँ स्वतंत्र नही है। वह अपनी बातों को अपनी इच्छाओं को खुलकर व्यक्त नही कर पाती है । उनका जीवन पति, बेटों, सास–ससुर, माता–पिता की सेवा करने में ही समाप्त हो जाता है। वे न तो समाज की परम्पराओं को छोड़कर आगे बढ़ पाती है और न ही तोड़ पाती है।''

चाहे राजनीतिक हो या आर्थिक अथवा सामाजिक, नारी हर क्षेत्र में संघर्ष कर रही है। फलस्वरूप आज वह बड़े से बड़े पद पर पदासीन है। कोई भी ऐसा कार्य नही जो वह न कर सकें। आज वह आर्थिक रूप से भी सम्पन्न बन रही है फिर भी समाज में नारी की दशा अत्यंत सोचनीय है, क्योंकि उसे मात्र सन्तान पैदा करने वाली मशीन समझा जाता है। नारी के विकास के लिये अनेक कानून बने। फिर भी वह कहीं दहेज प्रथा, कहीं अशिक्षा, कही अंधविश्वास तो कही यौन शोषण और अनेकानेक रूढ़िवादी दृष्टियों में वह उपेक्षित है। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द आदि मनीषियों ने नारी उत्थान के लिये जो उल्लेखनीय प्रयास किये है, उन्ही को और आगे नारी चेतना के संदर्भ में कृष्णा सोबती ने भी सहायोग किया किया है। कृष्णा सोबती ने अपने ''डार से बिछुड़ी (1958), मित्रो मरजानी (1967), सूरजमुखी अंधेरे के (1972), यारो के यार (1968), तिन पहाड़ (1983), जिन्दगीनामा (1980), ऐ लड़की (1997) दिलो दानिश (1993)'' में नारी चेतना के विविध आयामों को उभारा है।

समाज में रूढ़ि परम्परा के अनुसार ही धार्मिक कार्य होते है। यदि प्रेम को सफल बनान हो तो रूढ़ि परम्परा, सामाजिक विरोध और जाति–पाति को त्यागना पड़ता है। जिन्दगीनामा की लखमी सैय्यदड़े से प्रेम करती थी। इससे सामाजिक विरोध तो था ही साथ में जाति–पाति के कठोर बंधन भी थे। शाहनी के ही शब्दों में– ''अरी पवित्रों ब्रहामणों की तेरे सिर मौत खेल रही है। तू मर जाएगी। टोटे कर डालेंगे तेरे भाई–बिरादर तू नही बचती.....। वह आगे कहती है कि ''होश में आ। शौदाई हुई है क्या! अरी, पल्ले बांध ले, किसी भी बाहमनी का सॉई न कोई नमाजी सैययद न होगा।'' आधुनिक काल में स्थितियां बदल गयी है। किन्तु आज भी यौन संबंध अनेक कारणों से समस्याग्रस्त बन गया है। 'यारों के यार' में नाजायज यौन बंबंधो का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। इसीलिये यौन संबंध भी एक समस्या बन गयी है। अवस्थी का संबंध अन्य स्त्रियों से है तो उसकी पत्नी का नाजायज संबंध धीरू भाई से है। जैसे– अनैतिक संबंधो के कारण भी यौन संबंध दारजी के बाप–बेटे से है। भाटिया और अवस्था के साथ भी उसके अनैतिक संबंध है। तमन्ना के यौन संबंध अनेक पुरूषो से है। मित्रो मरजानी की बालो के भी अनैतिक संबंध अनेक पुरूष से है। उस इलाके के बड़भागी तहसीलदार और डिप्टी से उसके अनैतिक यौन संबंध है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

मित्रो कहती भी है – ''बोबो, ऊपर पौढ़ता डिप्टी तेरा इतना ही मित्र प्यारा है तो इस घुग्घुचिया को क्यों उससे मूल–ठेल करने भेजा।

उपन्यासों में कृष्णा सोबती ने अधिकार से वंचित नारी की समस्या को सूक्ष्मता से चित्रित किया है। डार से बिछुड़ी उपन्यास में पुराने पंजाब के सीमान्त जीवन की पृष्ठभूमि प्रसतुत की गयी है। पाशो अपने घर–परिवार से परतंत्र है। पाशो की अपनी इच्छा से शादी नही हो सकती। वह अपनी मर्जी से किसी से प्रेम नही कर पाती। जब पाशो ने करीमू के सामने मुस्कराने तथा रूमाल देने की योजना बना ली तब मामाओं ने पाशो की हत्या की योजना बना ली। समय सरगम की दमयंती भी अपने बेटे से अधिकार से बातें भी नही कर पाती। अपने दोस्तो के साथ वह ड्राइंग रूम में बैठ नही पाती उसका बेटा कहता है – ''मामा इन्हे अपने कमरे में ले जाइए। हमें कुछ जरूरी बात करनी है।'' पुरूष अब भी नारी को केवल उपभोग का साधन ही मानता है। जैसे लौटाया नही जाता, ऐसी धारणा बनी है। जिस समय पाशो लाला बूढ़े से वापस जाने की बात करती है, तो लाला बूढ़ा भी उसे कहता है – ''भागभरी, खरी बात कहता हूँ। सीधी रह चलेगी तो भला! तीन–तीन पहरू है, भूलकर भी ड्योढ़ी से बाहर पांव न रखना। सझ रख बीबी, बरकते को घड़ा–भर मोहरें दी है। तू अब इस घर की दात्'' लाला के तीनो बेटे बारी–बारी हुक्म चलाते और पाशो सबका हुक्म सिर झुका कर मानती रही है।

भारतीय जीवन में आधुनिक नारी का रूप भी देखने को मिलता है। आधुनिक नारी जब यह देखती है कि पति का बर्ताव ठीक नहीहै है तो वह विद्रोही बन जाती है। मित्रो मरजानी उपन्यास की मित्रो ऐसी ही नारी है।

आधुनिक संस्कृति के अनुसार भारतीय संस्कृति में बहुत कुछ बदलाव आया है। आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाह को भी काफी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। 'डार से बिछुड़ी, उपन्यास की विधवा मेहर खत्री जाति छोड़कर मुस्लिम धर्म के शेखजी से कर लेती है। किन्तु ऐसे समय मेहर या लखनी जैसी नारियां आधुनिक बनकर परम्परा से आयी हुयी संस्कृति का विरोध कर देती है। जिन्दगीनामा के महरी चाची ने भी अंतर्जातीय विवाह करने का ढांढस किया है। लेकिन आज के समय स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है। अधिकारों के लिये परिवार और बाहर के दुनियों में संघर्ष कररही है। भारतीय स्त्री से पहले पाश्चात्य स्त्रियों ने अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने के लिये प्रयास किये है।

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों में उस नारी का चित्रण किया है जो स्वतंत्र है और अपने प्रति अन्याय होने पर साहस के साथ शोषक को काले पानी की सजा तक दे देना चाहती है वह नैतिकता के दोहरे मापदण्डों पर विश्वास नही करती। वह आत्म सम्मानी है। अपने अस्तित्व बोध के प्रति सचेत है। नारी की द्वन्द्वात्मक स्थितियों का विवेचन कृष्णा जी ने किया है। माँ के रूप में, सास, विधवा, कन्या, बहु, भाभी, जेठानी, प्रेमिका, बहन, वेश्या, कालगर्ल, रखैल, वृद्धा, सौतन, पत्नी, घरेलू नौकरानी, मुजरा वाली और उन्नमुक्त नारी का विवेचन किया है। लेकिन उन्होने मुक्ति की तलाश में आधुनिक नारी जैसा चित्रण किया है जो परम्परागत वर्जनाओं से मुक्त है। नयी–नयी समस्याओं का सामना करती है। आर्थिक स्वावलम्बन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण वह अपने मित्रों, साथियों यहाँ तक की अपने पति का चुनाव भी वह अपनी इच्छा से कर रहीह[ै]। दिलो–दानिश की वानो का यह कथन–आज से पहले हम औरत भी नही थे, आंगिया थे, सलवार थे।..... जूती अपनी थी और पॉव को किसी को सौप रखे थे। वह आज पुरूष के हाथो का खिलौना नही है। विवाह संस्था को नकराने वाली नही। कुछ नारी वासना और शराब में डूबी हुयी। बन्धनों को तोड़ने वाली शिक्षित और गंवार आदि रूप का भी चित्रण किया है।

निष्कर्ष –

निश्चित रूप से स्वतन्त्रोत्तर हिन्दी महिला उपन्याकारो ने स्वतंत्र चेती, स्वच्छन्दी, फक्कड़ और गजब की निडर नारी होने के बावजूद भी कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व में जो सादगी और सरलता है। एक ओर लेखन में और जीवन में दमंग है तो

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

आचार विचार में अभंग। उनके लेखन में सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीयता, महादेवी वर्मा की आत्मवेदना और मन्नू भण्डारी की नारी भावना जैसा त्रिवेणी रूप मिलता है वही प्रेमचन्द की सामाजिकता, यशपाल की विद्रोहात्मकता और रेणु की आंचलकता का संग भी। इस तरह उन्हे साहित्य मे थ्री–इन–वन की संज्ञा मिली।

सन्दर्भ सूची:

1. प्रभु चावला इंडिया टुडे, अग्रस्त 1997, पृ0 48।
2. हिन्दी उपन्यासों में ग्राम्य समस्यायें, डॉ. ज्ञान अस्थाना, अमर प्रकाशन, मथुरा प्रथम 1979. पृ 112।
3. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन, डॉ. सुलोचना, अमन प्रकाशन कानपुर द्वि 2013. पृ. 63।
4. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन, डॉ. सौ. सुरेखा लक्ष्मण, मांबे, पूजा पब्लिकेशन, कानुपर 2011. पृ. 37।
5. डार से बिछुड़ी, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली प्रथम 1958. पृ. 96।
6. मित्रों मरजानी, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली प्रथम 1967. पृ. 18।
7. वही, पृ. 84।
8. हंस (पत्रिका), अरविन्द त्रिपाठी– (सं0 राजेन्द्र यादव) जुलाई 2000. पृ. 87।
9. दिलों दानिश, कृष्णा सोबती, पृ. 84।
10. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन, डॉ0 सुलोचना (डॉ. अर्जुन चौहान शोध का सच)।